समयसार प्रश्नोत्तरमाला

(समयसार अनुशीलन के आधार पर)

भाग–1

लेखिका

विद्वतरत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

बी.ए.ऑनर्स, एम.ए., पी.एच.डी. (स्वर्णपदक प्राप्त)

मो. 09321295265 / Email: dpptmumbai@gmail.com

मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रकाशक :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

समयसार प्रश्नोत्तरमाला : भाग–1 : विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

● **प्रथम संस्करण** : 1 हजार
(1 जनवरी, 2022)

● **E-book प्रथम संस्करण**
(25 मई, 2016)

मूल्य : **सात रुपये**

टाइपसैटिंग :
त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स,
ए–4, बापूनगर, जयपुर

मुद्रक :
देशना कम्प्यूटर
60 पूनम विहार
जगतपुरा, जयपुर

विषय–सूची

1.	पृष्ठभूमि	1
2.	गाथा – 1	6
3.	गाथा – 2	7
4.	गाथा – 3	10
5.	गाथा – 4	11
6.	गाथा – 5	12
7.	गाथा – 6	13
8.	गाथा – 7	19
9.	गाथा – 8	21
10.	गाथा – 9, 10	23
11.	गाथा – 11	24
12.	गाथा – 12	24
13.	गाथा – 13	26
14.	गाथा – 14	27
15.	गाथा–15	32
16.	गाथा–16	34
17.	गाथा–17–18	35

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक 'प्रश्नोत्तरमाला भाग–1' की लेखिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया बचपन से ही प्रतिभाशाली रही हैं। उन्होंने पूत के लक्षण पालने में ही नज़र आ जाते हैं – कहावत को चरितार्थ किया है। विद्वत्ता की दृष्टि से वे पिताश्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के पदचिन्हों पर ही चल रही हैं। उनके द्वारा अभी तक छोटी–बड़ी 51 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिनकी सूची आगे प्रकाशित की गई है।

साथ–ही–साथ आपने जैन सिद्धान्तों पर आधारित अनेक 'गेम्स' भी बनाए हैं, जिनके खेलने के नियम भी जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराते हैं। इन 'गेम्स' की विशेषता यह है कि इनको खेलने से बच्चों को सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ अहिंसात्मक आचरण की प्रवृत्ति भी सहज विकसित हो जाती है। इनमें जीत हिंसात्मक कार्य मार–पीट से नहीं, ज्ञान–ध्यान से हासिल की जाती है। बच्चों को ज्ञान–ध्यान करने की प्रेरणा मिलती है।

आपने 'आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों (rules and regulations) को ध्यान में रखते हुए आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों और टीकाकारों का सर्वांगीण (सम्पूर्ण) विवेचन सरल–सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है, जो कि विद्वत्जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ–साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट (attract) करता है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकें भी अद्यावधि (अब तक) जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्वज्ञान के समावेश के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेदज्ञान से ओतप्रोत हैं। आप विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न–भिन्न शैली में अध्यात्म को सरल भाषा में जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रही हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भी उसी अभिरुचि का परिणाम है। सभी पाठक समयसार को सरलता से हृदयंगम कर सकें – इस भावना से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। शीघ्र प्रकाशन व्यवस्था के लिए डॉ. अखिल बंसलजी का बहुत आभार है।

–परमात्मप्रकाश भारिल्ल
कार्यकारी महामंत्री

अपनी बात

प्रस्तुत पुस्तक 'प्रश्नोत्तरमाला' में समयसार की विषयवस्तु को छोटे-छोटे प्रश्नों में प्रस्तुत किया गया है।

यह पुस्तक - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल लिखित - 'समयसार अनुशीलन' के आधार पर लिखी गई है।

मैंने विषयवस्तु के आधार पर 'मिनी समयसार' में जो विभाजन किया है; उसी आधार से आरंभ की 18 गाथाओं के प्रश्नोत्तर ही इस पुस्तक में दिए गए हैं।

10-12 वर्ष पूर्व जब मैंने इस पुस्तक का गहराई से अध्ययन किया, तब विषय-वस्तु को याद रखने के लिए इन छोटे-छोटे प्रश्नों को अपनी डायरी में लिख लिया था।

कुछ माह पूर्व परमागम ऑनर्स के विद्यार्थियों के आग्रह पर इसको शृंखला के रूप में जैनपथ प्रदर्शक में प्रकाशित किया जाने लगा।

अनेक पाठकों के विशेष आग्रह और श्रीमती कमला भारिल्ल की विशेष प्रेरणा से यह पुस्तक आज आपके हाथों में हैं।

-डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

कीमत कम करने में सहयोग

1.	श्रीमती कमला भारिल्ल, जयपुर	1000.00
2.	श्रीमान मांगीलाल जैन, मुंबई	1000.00
3.	श्री महेश जे. पारेख, मुम्बई	501.00
4.	श्री मानिकचंदजी जैन 'एडजैल पेन वाले', मुम्बई	500.00
5.	श्री कैलाशचंदजी जैन, ठाकुरगंज	500.00
	कुल राशि	**3501.00**

परमागम ऑनर्स के विद्यार्थियों को सप्रेम भेंट
-श्रीमान अजितकुमार जैन, नोएडा

समयसार प्रश्नोत्तरमाला : भाग-1

(समयसार अनुशीलन के आधार पर)

पृष्ठभूमि

प्रश्न 1 दिगम्बर परम्परा के शिरोमणि आचार्य कौन हैं?

उत्तर - आचार्य कुन्दकुन्द

प्रश्न 2 जिनवाणी का सिरमौर ग्रन्थ कौन सा है?

उत्तर - समयसार

प्रश्न 3 समयसार के कर्ता (रचयिता) कौन हैं?

उत्तर - आचार्य कुन्दकुन्द

प्रश्न 4 शुद्धात्मा का प्रतिपादक ग्रन्थ कौन सा है?

उत्तर - समयसार

प्रश्न 5 समयसार का क्या अर्थ है?

उत्तर - शुद्धात्मा

प्रश्न 6 सच्चे सुख की प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर - शुद्धात्मा के आश्रय से।

प्रश्न 7 शुद्धात्मा के आश्रय से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - आत्मवस्तु को अर्थ व तत्त्व से जानकर आत्मवस्तु में स्थित होना।

प्रश्न 8 समयसार पढने से क्या लाभ है?

उत्तर - जो समयसार पढकर इसमें प्रतिपादित आत्मवस्तु को तत्त्व व अर्थ से जानकर उस आत्मवस्तु में स्थित होता है, वह सच्चा सुख प्राप्त करता है।

प्रश्न 9 अतीन्द्रिय आनन्द कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर - जो समयसार पढकर इसमें प्रतिपादित आत्मवस्तु को तत्त्व व अर्थ

से जानकर उस आत्मवस्तु में स्थित होता है, उसे अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त होता है।

प्रश्न 10 आचार्य अमृतचन्द्र ने किस ग्रन्थ को अक्षय चक्षु कहा है?

उत्तर – समयसार को।

प्रश्न 11 आचार्य अमृतचन्द्र ने प्रथम मंगलाचरण कलश में किसे नमस्कार किया है?

उत्तर – शुद्धात्मा को।

प्रश्न 12 ''समयसार'' शब्द से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का स्मरण कैसे हो सकता है?

उत्तर – यदि पर्याय की दृष्टि से विचार करें तो सर्वज्ञ पर्याय से संयुक्त 'अरहन्त और सिद्ध भगवान' (देव) ही समयसार हैं, समयसार ग्रन्थ 'शास्त्र' तो है ही और उसके कर्ता आचार्य कुन्दकुन्द 'गुरु' हैं। इसप्रकार समयसार शब्द से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का स्मरण हो गया।

प्रश्न 13 प्रथम कलश में शुद्धात्मा को कितने विशेषणों द्वारा समझाया गया है? नाम बताओ।

उत्तर – प्रथम कलश में शुद्धात्मा को चार विशेषणों के द्वारा समझाया गया है– 1. भावाय 2. चित्स्वभावाय 3. सर्वभावान्तरच्छिदे और 4. स्वानुभूत्या चकासते अर्थात् शुद्धात्मा सत्ता स्वरूप है, चैतन्यस्वभावी है, सर्वदर्शी एवं सर्वज्ञत्वादि शक्ति से सम्पन्न है और स्वानुभूति द्वारा प्रकाशित होता है।

प्रश्न 14 भावाय, चित्स्वभावाय, सर्वभावान्तरच्छिदे और स्वानुभूत्या चकासते कहकर आत्मा के किस स्वभाव को किस कलश में कहा गया है?

उत्तर – इन चार विशेषणों द्वारा आत्मा के द्रव्य-गुण और पर्याय स्वभाव को समयसार की आत्मख्याति टीका के प्रथम कलश में कहा गया है।

प्रश्न 15 द्रव्य, गुण, पर्याय से आत्मा को जानने से क्या लाभ है?

उत्तर – मोह का नाश।

प्रश्न 16 समय शब्द के मूलत: दो अर्थ कौन-कौनसे हैं?

उत्तर – आत्मा और छह द्रव्य।

प्रश्न 17 समय शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर आत्मा और छह द्रव्य अर्थ कैसे निकलते हैं?

उत्तर – समय शब्द 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अय्' धातु से बना है। 'अय्' का अर्थ गमन भी होता है और ज्ञान भी होता है। 'सम' का अर्थ 'एक साथ' होता है। इसप्रकार जिस वस्तु में एक ही काल में जानना (ज्ञान करना) और परिणमन करना – ये दोनों क्रियाएं पायी जावें, वह ही समय है। चूँकि जीव प्रतिसमय जानता भी है और परिणमन भी करता है, अत: जीव (आत्मा) नामक पदार्थ ही समय है। दूसरे अर्थ के अनुसार जो एकीभाव से अपने गुण-पर्यायों को प्राप्त हो, उसे समय कहते हैं – इस व्याख्या के अनुसार समय शब्द का अर्थ छहों द्रव्य लिया है।

प्रश्न 18 यदि समय का अर्थ छह द्रव्य करते हैं, तो समयसार का अर्थ क्या होता है?

उत्तर – यदि समय का अर्थ छह द्रव्य करते हैं, तो सार का अर्थ छहों द्रव्यों में **सर्वश्रेष्ठ सारभूत पदार्थ आत्मा होता है।**

प्रश्न 19 यदि समय का अर्थ आत्मा करते हैं, तो समयसार का क्या अर्थ होता है?

उत्तर – यदि समय का अर्थ आत्मा (जीवद्रव्य) करते हैं, तो सार का अर्थ द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित शुद्धात्मा होता है।

प्रश्न 20 टिप्पणी लिखिए –

(1) भावाय (2) चित्स्वभावाय

(3) सर्वभावान्तरच्छिदे (4) स्वानुभूत्याचकासते

उत्तर – **(1) भावाय –** भगवान आत्मा भावस्वरूप है, सत्ता स्वरूप है, सत् है। सत् द्रव्य का लक्षण है। इसप्रकार 'भाव' विशेषण के द्वारा सर्वप्रथम भगवान आत्मा के द्रव्य स्वभाव को बताकर उसके अस्तित्व की स्थापना की गई है; क्योंकि जिसका जगत में अस्तित्व न हो, उसका गुणानुवाद काल्पनिक ही सिद्ध होता है। किसी चीज का अस्तित्व सिद्ध हुए बिना उसकी चर्चा ही संभव नहीं है।

(2) चित्स्वभावाय – सत्ता स्वरूप भगवान आत्मा चैतन्य स्वभावी है, जानने-देखने के स्वभाव वाला है। जानना-देखना आत्मा का सहज स्वभाव है, असाधारण भाव है, जो सभी जीवद्रव्य (आत्माओं) में पाया जाता है; पुद्गलादि अजीव द्रव्यों में नहीं। इसीकारण यह आत्मा के पहिचान का चिह्न है। इसके माध्यम से आत्मा को अजीवादि परद्रव्यों से भिन्न जाना जा सकता है। इसप्रकार चित्स्वभावाय कहकर भगवान आत्मा के गुण स्वभाव को स्पष्ट किया गया है कि आत्मा ज्ञानादि अनन्त गुणों का अखण्ड पिण्ड है।

(3) सर्वभावान्तरच्छिदे – भगवान आत्मा सब पदार्थों को जानने-देखने वाला है, सर्वज्ञ स्वभावी है। इसप्रकार इस विशेषण द्वारा पर्याय स्वभाव (सर्वज्ञ स्वभाव) को बताया गया है। यहाँ प्रगट पर्याय (सर्वज्ञ पर्याय) सहित भगवान आत्मा की बात नहीं की गई है, अपितु सर्वज्ञ स्वभावी त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा की बात की गई है।

(4) स्वानुभूत्या चकासते – यह भगवान आत्मा स्वानुभूति के द्वारा जाना जाता है। यह आत्मा व्रत-उपवासादि क्रियाकाण्ड से पकड़ में आने वाला नहीं, इन्द्रियगम्य भी नहीं, अनुमानगम्य भी नहीं है; वह तो स्वानुभूति के अतिरिक्त अन्य उपायों से नहीं जाना जा सकता। इस विशेषण द्वारा भी आत्मा के पर्याय स्वभाव को बताया गया है।

प्रश्न 21 द्वितीय कलश में आशीर्वचन रूप से किसे नमस्कार किया है?

उत्तर – सरस्वती की मूर्ति को।

प्रश्न 22 सरस्वती की मूर्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – वस्तु में होने वाले अनन्त धर्मों को 'स्यात्' पद से एक धर्मी में अविरोध रूप से साधने वाली सरस्वती की मूर्ति है। यह ज्ञानरूप और वचनरूप होती है। **ज्ञानरूप –** ज्ञान में दो भेद हैं – प्रथम तो अनन्त धर्म सहित आत्मतत्त्व को प्रत्यक्ष देखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान केवलज्ञान सरस्वती की मूर्ति है, क्योंकि उसमें समस्त पदार्थ प्रत्यक्ष

प्रतिभासित होते हैं। द्वितीय-आत्मतत्त्व को परोक्ष देखने वाला श्रुतज्ञान भी सरस्वती की मूर्ति है। **वचनरूप –** द्रव्यश्रुत वचनरूप है, वह भी सरस्वती की मूर्ति है; क्योंकि वह वचनों द्वारा अनेक धर्मवाले आत्मा को बतलाता है।

प्रश्न 23 वाणी तो अचेतन है, उसे नमस्कार क्यों किया?

उत्तर – जीवादि पदार्थों के स्वरूप का ज्ञान कराने में निमित्त होने से सर्वज्ञानुसारिणी वाणी को भी पूज्यपना है, अत: उसे नमस्कार किया है।

प्रश्न 24 प्रत्यगात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर – सर्व परवस्तुओं से भिन्न, नैमित्तिक परभावों से भिन्न व अपने स्वरूप में तन्मय (अपने स्वरूपमय) आत्मा को प्रत्यगात्मा कहते हैं।

प्रश्न 25 प्रत्यगात्मा और शुद्धात्मा में क्या अन्तर है?

उत्तर – कुछ नहीं, दोनों पर्यायवाची हैं।

प्रश्न 26 प्रत्यगात्मा की प्रतिपादक किसे कहा गया है?

उत्तर – अनेकान्तमयी सरस्वती की मूर्ति को।

प्रश्न 27 आशीर्वादरूप जिनवाणी की वंदना में क्या भावना व्यक्त की गई है?

उत्तर – देशनालब्धि का साधन प्रत्यगात्मा का स्वरूप सदा उपलब्ध रहे। जिनवाणी अर्थात् शुद्धात्मा की प्रतिपादक वीतराग वाणी का प्रवाह निरन्तर चलता रहे।

प्रश्न 28 आचार्य अमृतचन्द्र ने कलश 3 में किन भावों को मलिनता कहा है?

उत्तर – संज्वलन कषाय संबंधी भावों को।

प्रश्न 29 आत्मख्याति टीका के फलस्वरूप आचार्य अमृतचन्द्र क्या कामना करते हैं?

उत्तर – परमविशुद्धि की।

प्रश्न 30 तीन कषाय चौकड़ी का अभाव होने से आचार्यदेव की परिणति वर्तमान में कैसी है?

उत्तर – विशुद्ध।

प्रश्न 31 'अथ सूत्रावतार:' कहकर आचार्यदेव समयसार के बारे में क्या स्पष्ट करना चाहते हैं?

उत्तर – ‘अथ सूत्रावतार:’ कहकर आचार्यदेव समयसार के लोक कल्याणकारी स्वरूप को स्पष्ट करना चाहते हैं।

गाथा – 1

प्रश्न 32 ध्रुव, अचल और अनुपम गति कौनसी है?

उत्तर – पंचम गति।

प्रश्न 33 पंचमगति ध्रुव क्यों है?

उत्तर – ध्रुव स्वभाव के अवलम्बन से उत्पन्न हुई होने पंचमगति ध्रुव है। यहाँ पर्याय की ध्रुवता की बात है।

प्रश्न 34 पंचमगति अचल क्यों है?

उत्तर – अनादिकालीन परिभ्रमण के अभाव होने से पंचमगति अचल है।

प्रश्न 35 पंचमगति अनुपम क्यों है?

उत्तर – उपमा देने योग्य जगत के सम्पूर्ण पदार्थों से विलक्षण होने से एवं अद्‌भुत महिमा की धारक होने से पंचमगति अनुपम है।

प्रश्न 36 पंचमगति को अपवर्ग क्यों कहते हैं?

उत्तर – धर्म, अर्थ और काम – इन त्रिवर्ग से भिन्न होने के कारण पंचमगति को अपवर्ग कहते हैं।

प्रश्न 37 यदि पंचमगति ध्रुव है, तो क्या उसमें परिवर्तन नहीं होता? स्पष्ट करें।

उत्तर – पंचमगति में परिवर्तन होता है, पर वह परिवर्तन सदा एक-सा ही होता है, ध्रुवरूप ही होता है; इसकारण उसे ध्रुव कहा है।

प्रश्न 38 ध्रुव स्वभाव और ध्रुव पर्याय में क्या अन्तर है?

उत्तर – ध्रुव स्वभाव सदा एकरूप रहता है और ध्रुव पर्याय सदा एकरूप नहीं रहती; किन्तु एक-सी रहती है। स्वभाव की ध्रुवता ‘एकरूप’ रहना है और पर्याय की ध्रुवता ‘एक-सी’ रहना है। ध्रुव स्वभाव के अवलम्बन से ध्रुव पर्याय उत्पन्न होती है और ध्रुव स्वभाव तो सदा विद्यमान रहता है।

प्रश्न 39 ध्रुव स्वभाव के अवलम्बन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – त्रिकाली ध्रुव ज्ञानानन्द स्वभावी निज भगवान आत्मा को अनुभूतिपूर्वक जानना, निज जानना और उसमें ही अपनापन स्थापित

होना, उसका ही ध्यान करना, उसमें ही लीन हो जाना ही ध्रुव स्वभाव का आश्रय है, अवलम्बन है।

प्रश्न 40 ध्रुव, अचल और अनुपम – इन तीन विशेषणों द्वारा आचार्यदेव क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर – आचार्यदेव उक्त विशेषणों में से ध्रुव विशेषण से विनाशीकपने का, अचल विशेषण से परिभ्रमण का और अनुपम विशेषण से चारों गतियों में पायी जाने वाली कथंचित् समानता का निषेध पंचमगति में करना चाहते हैं।

प्रश्न 41 भावस्तुति और द्रव्यस्तुति से क्या तात्पर्य है? अथवा दोनों में क्या अन्तर है?

उत्तर – प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त में आत्मा का अनुभव करना, शुद्धोपयोग में जाना ही भावस्तुति है और गाथा में शब्दों से नमस्कार करना द्रव्यस्तुति है।

गाथा – 2

प्रश्न 42 समय किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर – जो अपने गुण पर्यायों को प्राप्त हो, उसे समय कहते हैं। इस व्याख्या के अनुसार ‘समय’ शब्द में छहों द्रव्य समा जाते हैं। जो एक ही समय में गमन भी करे और ज्ञान भी करे उसे समय कहते हैं। इस व्याख्या के अनुसार समय शब्द का अर्थ मात्र जीव होता है। यह जीव नामक समय दो प्रकार का होता है – (1) स्वसमय और (2) परसमय

प्रश्न 43 स्वसमय और परसमय दोनों अवस्थाओं में व्यापक प्रत्यगात्मा को क्या कहते हैं?

उत्तर – समय

प्रश्न 44 स्वभाव में (दर्शन-ज्ञान) स्थित जीव को क्या कहते हैं?

उत्तर – स्वसमय

प्रश्न 45 परभाव (मोह, राग, द्वेषभाव) में स्थित जीव को क्या कहते हैं?

उत्तर – परसमय

प्रश्न 46 आचार्य अमृतचन्द्र ने गाथा-2 में जीव नामक समय का स्वरूप

कितने विशेषणों के माध्यम से स्पष्ट किया है अथवा समझाया है?

उत्तर – आचार्य अमृतचन्द्र ने उक्त गाथा में समय का स्वरूप सात विशेषणों से स्पष्ट किया है। वह समय नामक जीव पदार्थ –

(1) उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य युक्त सत्ता सहित है।

(2) ज्ञान-दर्शनरूप चैतन्य स्वभावी है।

(3) अपने असाधारण चैतन्य स्वभाव के सद्भाव एवं परद्रव्यों के विशेष गुणों के अभाव के कारण परद्रव्यों से भिन्न है।

(4) परद्रव्यों से एक क्षेत्रावगाहरूप से मिला होने पर भी अपने स्वरूप से च्युत नहीं होने के कारण टंकोत्कीर्ण चित्स्वभावी है।

(5) अनन्त धर्मात्मक एक अखण्ड द्रव्य है।

(6) अक्रमवर्ती गुणों और क्रमवर्ती पर्यायों से युक्त है।

(7) स्व-पर प्रकाशक सामर्थ्य से युक्त होने से अनेकाकार होने पर भी एकरूप है।

इसप्रकार समय शब्द को (1) उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से सहित (2) ज्ञान-दर्शनस्वभावी (3) परद्रव्यों और उनकी पर्यायों से अत्यन्त भिन्न (4) टंकोत्कीर्ण चैतन्यस्वभावी (5) अनन्तधर्मात्मक (6) गुणपर्यायवान और (7) स्व-पर प्रकाशक – इन सात विशेषणों से समझाया है।

प्रश्न 47 जीव के इन सात विशेषणों को आचार्य अमृतचन्द्र ने अपने मंगलाचरण के कलशों में किस रूप में प्रस्तुत किया है अथवा कैसे समाहित किया है?

उत्तर – (1) भावाय (2-4) चित्स्वभावाय (5) अनन्तधर्मण: तत्त्वं (6) सर्वभावान्तरच्छिदे (7) स्वानुभूत्या चकासते – इसप्रकार सात विशेषणों को कलश नं. 2 में 5 विशेषणों में समाहित किया गया है।

प्रश्न 48 स्वसमय और परसमय – ये दो भेद समयसार के भी हो सकते हैं क्या? यदि नहीं तो क्यों?

उत्तर – स्वसमय और परसमय – ये दो भेद समयसार के नहीं हो सकते; क्योंकि गुणपर्यायवान जीवद्रव्य ही स्वसमय और परसमय में विभक्त

होता है, समयसाररूपी शुद्धात्मा तो अविभक्त है, उसके तो कोई भेद होते ही नहीं है। अथवा

स्वसमय और परसमय के भेद पर्याय की ओर से किये गये भेद ही हैं। अत: ये भेद पर्याय सहित आत्मा के ही हो सकते हैं, जबकि समयसाररूप शुद्धात्मा तो अविभक्त है, उसमें कोई भेद होते ही नहीं।

प्रश्न 49 समयसार में किस भावरूप परिणत आत्मा को धर्मात्मा कहा गया है?

उत्तर – स्वसमयरूप परिणत आत्मा को धर्मात्मा (सम्यग्दृष्टि) कहा है।

प्रश्न 50 समयसार में किस भावरूप परिणत आत्मा को अधर्मात्मा कहा गया है?

उत्तर – परसमयरूप (मोह-राग-द्वेषरूप) परिणत आत्मा को अधर्मात्मा कहा है।

प्रश्न 51 समय स्वसमय कैसे बनता है?

उत्तर – समयसाररूप शुद्धात्मा के ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान से समय स्वसमय बनता है।

प्रश्न 52 समय परसमय कैसे बनता है?

उत्तर – समयसाररूप शुद्धात्मा के ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान के अभाव में मोह-राग-द्वेषरूप परिणत होकर आत्मा परसमय बनता है।

प्रश्न 53 समय, स्वसमय, परसमय और समयसार में हेय, उपादेय, ज्ञेय और ध्येय बताइये?

उत्तर – समय-ज्ञेय, स्वसमय-उपादेय, परसमय-हेय और समयसार-ध्येय है।

प्रश्न 54 स्वभाव में स्थित से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – भेदविज्ञान के बल से सभी परद्रव्यों में अपनापन तोड़कर जब जीव अपने त्रिकाली ध्रुव निज भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित करता है, उसे ही अपना जानता-मानता है, उसमें ही जमता-रमता है, तब उसे स्वभाव में स्थित (स्वसमय) कहते हैं।

प्रश्न 55 परभाव में स्थित का क्या तात्पर्य है?

उत्तर – जब जीव पुद्‌गल कर्म के उदय में निमित्त से प्राप्त संयोगों में, संयोगी भावों में अपनापन स्थापित करता है, उन्हें ही अपना जानता–मानता है, उनमें ही जमता–रमता है, तब उसे ही परभाव में स्थित (परसमय) कहते हैं।

प्रश्न 56 यहाँ संयोगों में किसे लिया है?

उत्तर – संयोगों में शरीर से लेकर स्त्री, पुत्रादि, नगरादि सभी बाह्य पदार्थों को लिया है।

प्रश्न 57 संयोगी भाव किन्हें कहा है?

उत्तर – मोह–राग–द्वेष भावों को।

गाथा – 3

प्रश्न 58 जगत के सभी द्रव्यों में कितनी विशेषताएँ समानरूप से पायी जाती हैं?

उत्तर – जगत के सभी द्रव्यों में चार विशेषताएँ समानरूप से पायी जाती हैं –

(1) जीवादि सभी पदार्थ अपने में ही मग्न हैं, अपने गुण–पर्यायों को ही आलंगित करते हैं, पर को स्पर्श तक नहीं करते।

(2) वे एक क्षेत्रावगाह से अत्यंत निकट रहने पर भी, अपने स्वरूप को नहीं छोड़ते, अपने स्वभाव से च्युत नहीं होते।

(3) पररूप परिणमन न करने से वे टंकोत्कीर्ण की भांति अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को धारण किये रहते हैं। अपनी इकाई को कायम रखते हैं।

(4) उत्पाद–व्यय तथा उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य जैसे विरोधी स्वभावों को एक साथ धारण करके वे विश्व का उपकार करते हैं/टिकाये रखते हैं।

प्रश्न 59 काम–भोग–बन्ध कथा विसंवाद (दुविधा) पैदा करने वाली क्यों है?

उत्तर – जब दो द्रव्य भिन्न–भिन्न अपने–अपने में ही रहते हैं, कोई किसी को छूता भी नहीं है, तो फिर आत्मा पुद्‌गल के प्रदशों में स्थित कैसे हो

सकता है? यही कारण है कि बन्ध कथा विसंवाद पैदा करती है।

प्रश्न 60 काम–भोग–बन्ध कथा का यह विसंवाद मिटे कैसे?

उत्तर – एकत्व–विभक्त आत्मा की चर्चा से यह विसंवाद मिटता है।

प्रश्न 61 कामकथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – स्पर्शन और रसना इन्द्रिय के विषयों की कथा को कामकथा कहा है।

प्रश्न 62 भोग कथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – घ्राण, चक्षु एवं कर्ण – इन तीनों इन्द्रियों के विषय की कथा को भोग कथा कहा है।

प्रश्न 63 बन्ध कथा से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – चार प्रकार के बन्ध व उनके फल में प्राप्त होने वाली नरकादि गतियों तथा गुणस्थानादिरूप संसारी पर्यायों की कथा को बन्ध कथा कहा है।

प्रश्न 64 चार प्रकार के बन्ध कौन–कौनसे हैं?

उत्तर – प्रकृति बन्ध, प्रदेश बन्ध, स्थिति बन्ध और अनुभाग बन्ध – ये चार प्रकार के बन्ध हैं।

गाथा – 4

प्रश्न 65 अज्ञानी की दुर्दशा का चित्र आचार्य अमृतचन्द्र ने अपनी टीका में किस प्रकार खींचा है?

उत्तर – अज्ञानी की दुर्दशा का चित्र खींचते हुए आचार्यदेव कहते हैं कि यह लोक संसाररूपी चक्की के पाटों के बीच अनाज के दानों के समान पिस रहा है। मोहरूपी भूत हमें पशुओं की भांति जोत रहा है, तृष्णारूपी रोग से जल रहा है, मृगतृष्णा में फंसकर मृग की भांति भटक रहा है – इसप्रकार पंचेन्द्रियों के विषयों में उलझा हुआ यह जीव परस्पर आचार्यत्व भी करता है अर्थात् लोग विषय–कषाय की चतुराईयाँ एक–दूसरे को बताते हैं, सिखाते हैं। जैसे – पैसा कैसे कमाना? उसे कैसे भोगना? आदि बातों को जगत को बताते हैं, उन्हीं कार्यों को करने की प्रेरणा भी देते हैं।

प्रश्न 66 स्पष्ट प्रकाशमान अनुभव में आने वाला आत्मा तिरोहित क्यों हो रहा है?

उत्तर - स्पष्ट प्रकाशमान आत्मा अनादिकालीन अज्ञान के कषायचक्र के साथ एकरूप किये जाने से तिरोहित हो रहा है।

प्रश्न 67 अनादिकालीन अज्ञान का नाश कैसे होगा?

उत्तर - एकत्व-विभक्त (त्रिकाली ध्रुव भगवान) आत्मा को समझकर, उसमें अपनापन स्थापित करने से अनादिकालीन अज्ञान का नाश होता है।

गाथा - 5

प्रश्न 68 एकत्व-विभक्त आत्मा को दिखलाने की प्रतिज्ञा किन आचार्य ने किस गाथा में की है?

उत्तर - आचार्य कुन्दकुन्द ने गाथा 5 में की है।

प्रश्न 69 आचार्य कुन्दकुन्द का वैभव क्या था, कैसा था और कैसे उत्पन्न हुआ था?

उत्तर - आचार्य कुन्दकुन्द का ज्ञान वैभव था, जो मुक्तिमार्ग के प्रतिपादन में पूर्णत: समर्थ था। वह ज्ञान वैभव जिनागम का अभ्यास कर सद्गुरुओं के मुख से उसके मर्म सुनकर, तर्क की कसौटी पर कसकर और अनुभव करके उत्पन्न हुआ था।

प्रश्न 70 समयसार का आधार क्या है? क्या वह काल्पनिक है?

उत्तर - नहीं, समयसार काल्पनिक नहीं। उसका आधार द्वादशांग जिनवाणी का सार और भगवान महावीर की दिव्यध्वनि का सार है।

प्रश्न 71 आचार्यदेव के अनुसार समयसार को कैसे प्रमाणित करना चाहिए? यह कहकर वे क्या कहना चाहते हैं? अथवा प्रेरणा देना चाहते हैं?

उत्तर - आचार्यदेव के अनुसार समयसार को अपने अनुभव से प्रमाणित करना चाहिए। यह कहकर आचार्यदेव पाठकों को स्वानुभव करने की प्रेरणा देना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि समयसार को प्रमाणित करने के नाम पर ही सही, पर एक बार स्वानुभव करने का प्रयास तो अवश्य करें।

प्रश्न 72 'छल ग्रहण नहीं करना' कहकर आचार्यदेव क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर - 'छल ग्रहण नहीं करना' कहकर आचार्यदेव पाठकों को हल्की सी डांट पिला रहे हैं कि गलती निकालने में ही अपनी बुद्धि का उपयोग न करना। अक्षर-मात्रा की चूक पर ध्यान मत देना, भाव को समझकर आत्मानुभव करने का प्रयास करना।

प्रश्न 73 'एकत्व' से क्या तात्पर्य है? अथवा एकत्व किसे कहते हैं?

उत्तर - स्व से अभेद को एकत्व कहते हैं अर्थात् अनन्त गुणों का अखण्ड पिण्ड, असंख्यात प्रदेशों का अखण्ड पिण्ड आत्मा गुणभेद और प्रदेशभेद से रहित है। आत्मा स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव से अखण्ड है, अभिन्न है - यही एकत्व है।

प्रश्न 74 विभक्त से क्या तात्पर्य है? या विभक्त किसे कहते हैं?

उत्तर - पर से भेद को विभक्त कहते हैं अर्थात् द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म अथवा पर और पर्याय से जुदा होना विभक्त है। अपनी मान्यताओं में पर का प्रवेश न होना पर से संबंध न होना विभक्त है।

प्रश्न 75 आत्मा का पर से संबंध कितने प्रकार का होता है?

उत्तर - आत्मा का पर से संबंध चार प्रकार का होता है -
एकत्वबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि।
यह मैं हूँ - यह एकत्वबुद्धि है। यह मेरा है - यह ममत्वबुद्धि है। मैं इसका कर्ता हूँ - यह कर्तृत्वबुद्धि है। मैं इसका भोक्ता हूँ - यह भोक्तृत्वबुद्धि है।

गाथा - 6

प्रश्न 76 पिछली गाथाओं में जिसे एकत्व-विभक्त भगवान आत्मा कहा गया है, छठवीं गाथा में उसे क्या कहा गया है?

उत्तर - ज्ञायक भाव।

प्रश्न 77 छठवीं गाथा में किस विषय को स्पष्ट किया गया है?

उत्तर - छठवीं गाथा में दृष्टि के विषय को स्पष्ट किया गया है अर्थात् जिस आत्मा का ध्यान करने से केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, जिस आत्मा में अपनापन स्थापित करने का नाम सम्यग्दर्शन है, जिस आत्मा को जानने का नाम परमशुद्ध निश्चय नय है तथा जो आत्मा

परमपारिणामिक भावरूप है; उस भगवान आत्मा का स्वरूप ही इस गाथा में स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न 78 आत्मा को पारिणामिक भाव न कहकर ज्ञायकभाव क्यों कहा गया है?

उत्तर – आत्मा परमपारिणामिक भाव होने पर भी आत्मा को ज्ञायकभाव इसलिए कहा गया है कि पारिणामिक भाव तो सभी द्रव्यों में समानरूप से पाया जाता है; पर ज्ञायकभाव आत्मा का असाधारण भाव है।

प्रश्न 79 परम उपादेय भाव कौनसा है और क्यों?

उत्तर – परम उपादेय भाव ज्ञायकभाव है; क्योंकि यही मुक्तिमार्ग का मूल आधार है।

प्रश्न 80 व्याख्या कीजिए – अपरिणामी ज्ञायकभाव परभावों से भिन्न उपासित होता हुआ शुद्ध कहलाता है।

उत्तर – परपदार्थों और उनके भावों से भिन्न होने के कारण यद्यपि ज्ञायकभाव सदा शुद्ध ही है, तथापि जब तक यह ज्ञायकभाव अपने श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का विषय नहीं बनता, अनुभूति में नहीं आता; तब तक उसके शुद्ध होने का लाभ पर्याय में प्राप्त नहीं होता, मिथ्यात्व की ग्रन्थि का भेद नहीं होता, आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्द की कणिका नहीं जगती। अत: यह कहा गया है कि परभावों से भिन्न उपासित होता हुआ शुद्ध कहलाता है। अनुभव के काल में ज्ञायकभाव जैसा नजर आता है, परमशुद्ध निश्चयनय का विषयभूत वही ज्ञायकभाव शुद्ध कहलाता है।

प्रश्न 82 ज्ञायकभाव कैसा है?

उत्तर – ज्ञायकभाव अनादि अनंत नित्य उद्योतरूप स्पष्ट प्रकाशमान ज्योति है। वह प्रमत्त भी नहीं है, अप्रमत्त भी नहीं है; गुणस्थानातीत है, शुद्ध है और ज्ञाता है।

प्रश्न 83 ज्ञायकभाव अनादि अनंत कैसे है?

उत्तर – किसी से उत्पन्न न हुआ होने से और स्वयं अपने में ही सिद्ध होने से अनादि सत्तारूप है तथा कभी भी विनाशपने को प्राप्त न होने से अनंत है।

प्रश्न 84 ज्ञायकभाव नित्य उद्योतरूप स्पष्ट प्रकाशमान ज्योति कैसे है?

उत्तर – ज्ञायकभाव क्षण-क्षण में नाश को प्राप्त नहीं होता है, अत: नित्य उद्योतरूप है और ज्ञानियों के नित्य अनुभव में आता है, गुप्त नहीं है, प्रकट है; अत: स्पष्ट प्रकाशमान ज्योति है।

प्रश्न 85 ज्ञायकभाव प्रमत्त और अप्रमत्त क्यों नहीं है?

उत्तर – ज्ञायकभाव द्रव्य स्वभाव की अपेक्षा से अशुद्ध-शुद्ध भावों के स्वभावरूप परिणमित नहीं होने से प्रमत्त भी नहीं है और अप्रमत्त भी नहीं है। शुभ और अशुभ दोनों भाव अशुद्ध भावों के ही भेद हैं।

प्रश्न 86 क्या हम कह सकते हैं कि ज्ञायकभाव अशुभ भाव रूप परिणमित नहीं होने से प्रमत्त नहीं है और शुभ भाव रूप परिणमित नहीं होने से अप्रमत्त नहीं है? यदि नहीं, तो सही क्या है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – उक्त कथन सही नहीं है, सही कथन यह है कि शुभाशुभ अशुद्ध भाव रूप परिणमित न होने से ज्ञायकभाव प्रमत्त नहीं है और उसके अभाव में होने वाले निर्मल भाव शुद्ध भाव अप्रमत्त भाव हैं। ज्ञायकभाव न तो मलिन भावरूप ही है और न पर्यायगत निर्मल भावरूप ही है, क्योंकि वह परिणमनरूप ही नहीं है, वह तो अपरिणामी तत्त्व है।

प्रश्न 87 क्या ज्ञायकभाव अपरिणामी तत्त्व है? यदि हाँ, तो कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – ज्ञायकभाव अपरिणामी तत्त्व है, क्योंकि वह शुभाशुभ भावरूप परिणमित न होने से प्रमत्त नहीं है ये दोनों ही भाव प्रमत्त भाव हैं और उनके अभाव में होने वाले निर्मल भाव शुद्ध भाव अप्रमत्त भाव हैं। ज्ञायकभाव न तो मलिनभावरूप ही है और न पर्यायगत निर्मलभावरूप ही है; क्योंकि वह परिणमनरूप ही नहीं है, वह तो अपरिणामी तत्त्व है।

प्रश्न 88 ज्ञायकभाव गुणस्थानातीत क्यों है?

उत्तर – ज्ञायकभाव प्रमत्त व अप्रमत्त न होने से गुणस्थानातीत है। यहाँ आरम्भिक छ: गुणस्थानों का निषेध 'प्रमत्त' शब्द से और अन्तिम आठ गुणस्थानों का निषेध 'अप्रमत्त' शब्द से हो गया है।

प्रश्न 89 ज्ञायकभाव शुद्ध क्यों कहलाता है? (गाथा 6 के आधार पर)

उत्तर – ज्ञायकभाव परद्रव्य और उनके भावों से सर्वथा भिन्न है, पर के साथ इसका कोई भी संबंध नहीं है, इसी कारण वह पर से भिन्न अनुभव में आता हुआ शुद्ध कहलाता है।

प्रश्न 90 जब ज्ञान ज्ञेयाकार परिणमित होता है तो ज्ञेयों के साथ ज्ञायक का ज्ञेय–ज्ञायक संबंध हो जाता है, परज्ञेयों के साथ संबंध सिद्ध हो जाने पर ज्ञायक को शुद्ध कैसे कहा जा सकता है?

उत्तर – यदि ज्ञान के ज्ञेयाकार परिणमन में ज्ञेय कारण बने तो ही ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता आ सकती है; किन्तु ज्ञान का परिणमन तो स्वयं अपनी योग्यता से स्वतंत्र ही होता है, अत: ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता नहीं हो सकती। वस्तुत: ज्ञान में जो ज्ञेयों के आकार भासित होते हैं, वे आकार ज्ञान की ही पर्यायें हैं, ज्ञेयों की नहीं, अत: ज्ञान ज्ञानाकार ही रहा। ऐसी स्थिति में ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता न होने से ज्ञायक को शुद्ध कहा जाता है।

प्रश्न 91 क्या आत्मा का ज्ञायक नाम परज्ञेयों के जानने के कारण ही पड़ा है? सतर्क स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – नहीं, मात्र पर को जानने के कारण ही आत्मा ज्ञायक नहीं है; अपितु स्वयं के जानने के कारण भी वह ज्ञायक है।

प्रश्न 92 ज्ञायकभावरूप से ज्ञात हुआ आत्मा ही शुद्धात्मा है – इसमें 'ज्ञायकभावरूप से ज्ञात हुआ' का क्या अर्थ है स्पष्ट कीजिए?

उत्तर – यह आत्मा जानने में भी आता है और जानता भी है। जानने में आने के कारण इसे ज्ञेय कहते हैं और जानने वाला होने से ज्ञायक कहते हैं। आत्मा का ज्ञायकभाव अर्थात् जानने वाला भाव 'ज्ञान' है क्योंकि अपने ज्ञान गुण के कारण ही आत्मा जानता है। इसप्रकार 'ज्ञायकभावरूप में ज्ञात हुआ का अर्थ हुआ कि 'ज्ञान रूप से जानने में आता हुआ' आत्मा ही शुद्धात्मा है। अनुभूति में भी जो आत्मा ज्ञान का ज्ञेय बनता है, उसमें भी आत्मा के ज्ञायक भाव (ज्ञान) की मुख्यता होती है। अत: यह कहा जाता है कि अनुभूति में आत्मा

ज्ञायकभाव से ही ज्ञात होता है।

प्रश्न 93 ज्ञायक भाव को उपासित होता हुआ शुद्ध कब कहा जाता है? या ज्ञायक भाव को अनुभव में आता हुआ शुद्ध कब कहा जाता है?

उत्तर – जब पर के साथ का ज्ञेय–ज्ञायक संबंध छूटकर आत्मा ही ज्ञेय और आत्मा ही ज्ञायक – इसप्रकार जो ज्ञेय–ज्ञायक भी अभेद हो जाते हैं तब ज्ञायक भाव को उपासित होता हुआ (अनुभव में आता हुआ) शुद्ध कहा जाता है।

प्रश्न 94 आत्मा को ज्ञायक क्यों कहा जाता है?

उत्तर – ज्ञेयों को जानने के कारण आत्मा को ज्ञायक कहते हैं।

प्रश्न 95 ज्ञायक भाव स्वयं शुद्ध कैसे है?

उत्तर – ज्ञेय ज्ञान में प्रतिभासित हुआ वैसा ज्ञायक का ही अनुभव करने पर ज्ञायक ही है, यह जो मैं जानने वाला हूँ सो मैं ही हूँ; अन्य कोई नहीं – ऐसा अपने को अभेदरूप अनुभूत हुआ तब इस जाननेरूप क्रिया का कर्ता स्वयं ही है और जिसे जाना वह कर्म भी स्वयं ही है, ऐसा ज्ञायक भाव स्वयं शुद्ध है।

प्रश्न 96 ज्ञायकभाव और शुद्धात्मा में क्या अन्तर है?

उत्तर – दोनों में कुछ अन्तर नहीं है। ज्ञायकभाव = जानने वाला भाव। जानने वाला भाव ज्ञान ही है, शुद्ध ज्ञान है। इसप्रकार जानने वाला भाव कहो या शुद्धात्मा कहो – दोनों पर्यायवायी ही हैं।

प्रश्न 97 ज्ञायकभाव सिद्ध है या संसारी?

उत्तर – ज्ञायकभाव ना सिद्ध है, न संसारी; यह तो संसारी व सिद्ध – दोनों अवस्थाओं में समान रूप से गुणस्थानातीत है। इसमें न गुणस्थानरूप अवस्था है, ना गुणस्थानों के अभाव रूप अवस्था है, यह अवस्थारूप है ही नहीं।

प्रश्न 98 यदि ज्ञायकभाव सदा शुद्ध है तो उसका लाभ हमें प्राप्त क्यों नहीं होता?

उत्तर – पर्याय में शुद्धता न होने से हमें द्रव्य की शुद्धता का लाभ प्राप्त नहीं होता है।

प्रश्न 99 पर्याय में शुद्धता कैसे आती है?

उत्तर – पर्याय में शुद्धता ज्ञायकभाव के अनुभव से आती है।

प्रश्न 100 ज्ञायकभाव के शुद्ध होने का लाभ हमें कब प्राप्त होता है?

उत्तर – जब ज्ञायकभाव अपना अनुभव कर पर्याय में शुद्ध होता है तब ज्ञायकभाव में शुद्ध होने का लाभ हमें प्राप्त होता है।

प्रश्न 101 क्या संसारी जीवों की आत्मा द्रव्य और पर्याय दोनों दृष्टि से शुद्ध है?

उत्तर – नहीं, संसारी जीवों की आत्मा द्रव्य और पर्याय दोनों दृष्टि से शुद्ध नहीं है। द्रव्यदृष्टि से द्रव्य वही है; ज्ञान स्वरूप ही है, वह कहीं जड़ नहीं हुआ है, अत: द्रव्यदृष्टि से आत्मा शुद्ध है। पर्यायदृष्टि से देखा जाए तो मलिन ही दिखाई देगा। पर्याय में आत्मा पुद्गल कर्म के निमित्त से रागादिरूप मलिन है। अत: पर्यायदृष्टि से आत्मा अशुद्ध है।

प्रश्न 102 यह अशुद्धता आत्मा में कैसे आती है?

उत्तर – आत्मा में अशुद्धता परद्रव्य के संयोग से आती है।

प्रश्न 103 अशुद्धता के आने से क्या पूरा द्रव्य अशुद्ध हो जाता है, मलिन हो जाता है?

उत्तर – नहीं, पूरा द्रव्य अशुद्ध नहीं होता, मलिन नहीं होता। मूल द्रव्य कभी भी अन्य द्रव्य रूप नहीं होता, मात्र अवस्था (पर्याय) मलिन होती है। द्रव्य तो शुद्ध ही रहता है।

प्रश्न 104 क्या ज्ञेयकृत अशुद्धता ज्ञान में प्रवेश करती है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि परज्ञेयों से आत्मा का कोई संबंध नहीं है, अत: ज्ञेयकृत अशुद्धता ज्ञान में प्रवेश नहीं करती है तथा ज्ञेय को जानने रूप ज्ञान की योग्यता के कारण ही ज्ञान का परिणमन ज्ञेयाकार होता है। इसकारण भी ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता नहीं होती अथवा ज्ञान के ज्ञेयाकार परिणमन में ज्ञेय कारण बने तो ही ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता आ सकती है; किन्तु ज्ञान का परिणमन तो स्वयं अपनी योग्यता से स्वतंत्र ही होता है; अत: ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता नहीं हो सकती। वस्तुत: ज्ञान में ज्ञेयों के जो आकार भासित होते हैं, वे आकार ज्ञान की ही पर्यायें हैं, ज्ञेयों की नहीं, अत: स्पष्ट ही है कि ज्ञान ज्ञानाकार

ही रहा – ऐसी स्थिति में उसमें ज्ञेयकृत अशुद्धता संभव ही नहीं है।

प्रश्न 105 ज्ञानाकारों को ज्ञेयाकार क्यों कहा जाता है? उदाहरण सहित बताएँ।

उत्तर – यह बताने के लिए कि अमुक ज्ञान पर्याय में ज्ञेय अमुक पदार्थ ही बने हैं। जैसे – चश्मे को जानने वाले ज्ञान को चश्माकार इसलिए कहा जाता है कि जिससे यह पता चल सके कि इस ज्ञान का ज्ञेय चश्मा ही बना है, अन्य पदार्थ नहीं। बस इसीकारण ज्ञानाकारों को ज्ञेयाकार कहा जाता है।

प्रश्न 106 पर के साथ का ज्ञेय-ज्ञायक संबंध अशुद्धि का जनक क्यों है?

उत्तर – पर के साथ का ज्ञेय-ज्ञायक संबंध व्यवहार होने से अशुद्धि का जनक है।

प्रश्न 107 ज्ञेय-ज्ञायक संबंध कितने प्रकार का है? नाम बताओ।

उत्तर – ज्ञेय-ज्ञायक संबंध दो प्रकार का होता है – एक पर के साथ का, दूसरा स्व के साथ का। ज्ञायक आत्मा पर को भी जानता है और स्व को भी जानता है। पर के साथ वाला ज्ञेय-ज्ञायक संबंध अशुद्धि का जनक है, स्व के साथ वाला शुद्ध है।

गाथा – 7

प्रश्न 108 ज्ञायकभाव में दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि गुणभेद का निषेध क्यों किया गया है?

उत्तर – गुणों के भेदों में जाने से विकल्पों की उत्पत्ति होती है, इसकारण अनुभूति के विषयभूत ज्ञायकभाव में गुणभेद का निषेध किया गया है।

प्रश्न 109 ज्ञायक आत्मा में गुणभेद के निषेध द्वारा किस नय के विषय का निषेध किया जा रहा है?

उत्तर – ज्ञायक आत्मा में गुणभेद के निषेध द्वारा अनुपचरित सद्भूत व्यवहार नय के विषय का निषेध किया जा रहा है।

प्रश्न 110 उपचरित सद्भूत व्यवहारनय का निषेध किस गाथा में किया गया है?

उत्तर – छठवीं गाथा में उपचरित सद्भूत व्यवहार नय का निषेध किया गया है।

प्रश्न 111 असद्भूत व्यवहार नयों का निषेध किस गाथा की टीका में किया गया है?

उत्तर – उपचरित और अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नयों का निषेध तीसरी गाथा की टीका में किया गया है और परद्रव्यों से भिन्न उपासित होता हुआ कहकर छठवीं गाथा की टीका में भी कर दिया गया है।

प्रश्न 112 ज्ञायकभाव की शुद्धता का वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर – पर से भिन्न, प्रमत्त अप्रमत्त पर्यायों से भिन्न एवं गुणभेद से भी भिन्न ज्ञायकभाव अनुभूति में आता हुआ शुद्ध कहलाता है।

प्रश्न 113 दृष्टि का विषय क्या है?

उत्तर – पर से भिन्न, प्रमत्त-अप्रमत्त पर्यायों से भिन्न एवं गुणभेद से भी भिन्न ज्ञायकभाव ही दृष्टि का विषय है।

प्रश्न 114 ध्यान का ध्येय क्या है?

उत्तर – पर से भिन्न, प्रमत्त-अप्रमत्त पर्यायों से भिन्न एवं गुणभेद से भी भिन्न ज्ञायकभाव ही ध्यान का ध्येय है।

प्रश्न 115 परमशुद्ध निश्चयनय का विषयभूत परम पदार्थ क्या है?

उत्तर – शुद्ध ज्ञायकभाव।

प्रश्न 116 परमभावग्राही द्रव्यार्थिक नय का विषयभूत परमपारिणामिक भाव कौनसा है?

उत्तर – शुद्ध ज्ञायकभाव।

प्रश्न 117 आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चारित्र – ये तीन भाव किस नय से कहे जाते हैं?

उत्तर – व्यवहारनय से।

प्रश्न 118 ज्ञानादि गुणों के अखण्ड पिण्ड आत्मा में ज्ञान-दर्शन-चारित्र गुण नहीं हैं – यह क्यों कहा गया है?

उत्तर – निश्चयनय से अनंत पर्यायों को एक द्रव्य पी गया होने से, जो एक है, अभेद है – ऐसे कुछ मिले हुए आस्वाद वाले एक स्वभावी तत्त्व का अनुभव करने वाले को 'ज्ञान-दर्शन-चारित्र' गुण नहीं हैं – ऐसा कहा गया है- अर्थात् अनुभूति के विषयभूत ज्ञायकभाव में ज्ञान-

दर्शन-चारित्र रूप गुणभेद का निषेध किया गया है; क्योंकि गुणों के भेदों में जाने से विकल्पों की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न 119 गुणभेद भी तो वस्तु का स्वभाव है, पर्यायें भी द्रव्य का अंश हैं, द्रव्य के ही भेद हैं अवस्तु (परवस्तु) नहीं, तब फिर इन्हें व्यवहार कहकर भेद को गौण क्यों किया गया है?

उत्तर – भेद को गौण करने पर अभेद भलीभांति प्रतिभासित होता है, इसीलिए यहाँ भेदरूप व्यवहार को गौण किया गया है अर्थात् भेददृष्टि में निर्विकल्प दशा नहीं होती, सम्यग्दर्शन नहीं होता; अपितु राग ही उत्पन्न होता है – इसीलिए पर्याय दृष्टि छुड़ाकर द्रव्यदृष्टि कराने का प्रयोजन होने से अभेद को मुख्य करके उपदेश दिया है।

प्रश्न 120 जिस प्रकार दृष्टि के विषय में गुण अखण्ड अभेदपने शामिल हैं, पर गुणभेद नहीं; उसी प्रकार दृष्टि के विषय में पर्यायें भी अभेदपने शामिल हो सकती हैं क्या?

उत्तर – नहीं, पर्यायें शामिल नहीं हो सकतीं, क्योंकि पर्यायें विषयी हैं, विषय बनाने वाली हैं, अत: वे विषय में शामिल नहीं हो सकती।

प्रश्न 121 क्या वर्तमान अभेद पर्याय दृष्टि के विषय में मिल सकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – नहीं, वर्तमान पर्याय भिन्न रहकर द्रव्य को विषय बनाती है, इसीलिए वह दृष्टि के विषय में शामिल नहीं होती।

प्रश्न 122 पर्याय को अभेद क्यों कहा जाता है?

उत्तर – पर्याय अभेद अखण्ड द्रव्य की ओर ढलती है – इस अपेक्षा उसे अभेद कहा जाता है।

प्रश्न 123 दृष्टि के विषय में काल (पर्याय) किस रूप में शामिल है?

उत्तर – अनुस्यूति से रचित प्रवाह के रूप में अर्थात् प्रवाह की निरंतरता के रूप में काल (पर्याय) शामिल है।

प्रश्न 124 अनुस्यूति से रचित प्रवाह गुण है या पर्याय?

उत्तर – गुण

गाथा – 8

प्रश्न 125 यदि व्यवहार नय हेय है तो उसका कथन ही क्यों किया गया है?

उत्तर – व्यवहार के बिना निश्चय का कथन अशक्य होने से व्यवहार का कथन किया गया है अथवा निश्चय नय का प्रतिपादक होने से व्यवहार का कथन किया गया है।

प्रश्न 126 गाथा आठ की टीका में पंचलब्धियों की ओर किस प्रकार संकेत किया गया है?

उत्तर – आत्मा के बारे में जानने की पात्रता क्षयोपशम लब्धि को सूचित करता है। समझ में ना आने पर क्रोधित न होना, अरुचि प्रदर्शित नहीं करना और टकटकी लगाकर देखते ही रहना विशुद्धि लब्धि को सूचित करता है। आचार्यदेव के द्वारा समझाना देशना लब्धि को सूचित करता है। प्रसन्नचित्त से देशना को सुनना, समझने में चित्त लगाना प्रायोग्य लब्धि को सूचित करता है और गुरु वचन का मर्म ख्याल में आते ही बोध तरंगों का उछलना करण लब्धि का सूचक है।

प्रश्न 127 आत्मा के बारे में अनभिज्ञ शिष्यों को आत्मा की बात समझ में कब आती है?

उत्तर – आत्मा के बारे में अनभिज्ञ जीव में जब पात्रता हो, अपने आत्मा को समझने योग्य बुद्धि का विकास हो, कषायें मन्द हों, आत्मा समझने की तीव्र रुचि हो, आत्मज्ञानी गुरु के प्रति बहुमान का भाव हो, आस्था हो, यथायोग्य विनय हो, उनसे आत्मा का स्वरूप समझने की धगस हो, गहरी जिज्ञासा हो, पूरा-पूरा प्रयास हो तो योग्य गुरु के द्वारा करुणापूर्वक व्यवहार मार्ग से समझाये जाने पर आत्मा की बात उसकी समझ में आती है।

प्रश्न 128 आत्मानुभव किसे, कैसे और कब होता है? अथवा सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की विधि क्या है?

उत्तर – जिस जीव में पात्रता हो, अपने आत्मा को समझने योग्य बुद्धि का विकास हो, कषायें मन्द हों, आत्मा की तीव्र रुचि हो, आत्मज्ञानी गुरु के प्रति बहुमान का भाव हो, आस्था हो, यथायोग्य विनय हो, उनसे आत्मा का स्वरूप समझने की धगस हो, गहरी जिज्ञासा हो, पूरा-पूरा प्रयास हो तो योग्य गुरु के द्वारा करुणापूर्वक व्यवहार मार्ग से समझाये जाने पर आत्मा की बात उसकी समझ में आती है और यदि तब पुरुषार्थ की उग्रता हो तब आत्मानुभव होता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है।

प्रश्न 129 व्यवहार नय की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर – परमार्थ के प्रतिपादन के लिए व्यवहार नय की आवश्यकता है।

प्रश्न 130 क्या परमार्थ का प्रतिपादक व्यवहार नय अनुसरण योग्य है?

उत्तर – नहीं, व्यवहार अनुसरण योग्य नहीं है। अनुसरण योग्य तो परमार्थ (निश्चय नय) ही है, क्योंकि निश्चय के आश्रय से ही सम्यग्दर्शन होता है।

गाथा – 9, 10

प्रश्न 131 व्यवहार श्रुतकेवली किसे कहते हैं?

उत्तर – जो सर्वश्रुत को जानते हैं; उन्हें व्यवहार श्रुतकेवली कहते हैं।

प्रश्न 132 निश्चय श्रुतकेवली किसे कहते हैं?

उत्तर – जो श्रुतज्ञान से केवल एक शुद्धात्मा को जानते हैं, उन्हें निश्चय श्रुतकेवली कहते हैं।

प्रश्न 133 क्या आत्मानुभव के बिना द्वादशांग के पाठी श्रुतकेवली हो सकते हैं?

उत्तर – नहीं, आत्मानुभव के बिना ग्यारह अंग और नौ पूर्व तक का ही ज्ञान होता है, द्वादशांग का नहीं। अत: द्वादशांग के पाठी श्रुतकेवली आत्मानुभवी ही होते हैं।

प्रश्न 134 क्या निश्चय श्रुतकेवली और व्यवहार श्रुतकेवली दो अलग-अलग व्यक्ति हो सकते हैं? कारण बताओ।

उत्तर – नहीं, निश्चय श्रुतकेवली और व्यवहार श्रुतकेवली दो अलग-अलग व्यक्ति नहीं हो सकते, वे एक ही होते हैं, क्योंकि आत्मानुभव के कारण जिन्हें निश्चय श्रुतकेवली कहते हैं, द्वादशांग के पाठी होने के कारण उन्हें ही व्यवहार श्रुतकेवली कहते हैं। निश्चय और व्यवहार

– ये दोनों ही नय एकसाथ एक ही समय में एक ही व्यक्ति पर घटित होते हैं, अन्य-अन्य व्यक्तियों पर नहीं, अन्य-अन्य समयों पर भी नहीं। निश्चय श्रुतकेवली और व्यवहार श्रुतकेवली में न व्यक्ति भेद है और न समय भेद ही।

प्रश्न 135 निश्चय और व्यवहार श्रुतकेवली कौन-कौनसे गुणस्थानों में हो सकते हैं?

उत्तर – ये दोनों श्रुतकेवली चौथे से बारहवें गुणस्थान तक ही होते हैं, उसके पहले और बाद में नहीं; क्योंकि तेरहवें गुणस्थान वाले तो केवली हो जाते हैं और मिथ्यादृष्टि जीव न तो द्वादशांग के पाठी होते हैं और न ही आत्मज्ञानी हो सकते हैं।

प्रश्न 136 क्या अन्य गतियों में भी द्वादशांग के पाठी हो सकते हैं?

उत्तर – हाँ, देवगति में सौधर्म इन्द्र आदि, लौकान्तिक देव एवं सर्वार्थसिद्धि आदि के अहमिन्द्र भी द्वादशांग के पाठी और आत्मानुभवी होते हैं।

गाथा – 11

प्रश्न 137 व्यवहार नय का अनुसरण क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर – व्यवहार नय के आश्रय से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति नहीं होती, इसलिए व्यवहार नय का अनुसरण नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 138 यदि व्यवहार नय अनुसरण करने योग्य नहीं है तो फिर इसका उपदेश ही क्यों दिया जाता है?

उत्तर – व्यवहार नय सर्वथा निषेध करने योग्य नहीं है, क्योंकि यह नय कभी-कभी किन्हीं-किन्हीं को प्रयोजनवान होता है, अत: इसका उपदेश दिया जाता है।

गाथा – 12

प्रश्न 139 व्यवहार नय किन-किन को और कब प्रयोजनवान है?

उत्तर – साधक अवस्था में जीवों को जब तक साक्षात् शुद्धात्मा की प्राप्ति न हो तब तक व्यवहार नय उस काल जाना हुआ प्रयोजनवान है।

प्रश्न 140 परमभाव और अपरमभाव को कितने प्रकार से घटित कर सकते हैं और कैसे?

उत्तर – इन भावों को तीन प्रकार से घटित कर सकते हैं –

(1) श्रद्धा की अपेक्षा – सम्यग्दृष्टि ज्ञानी पुरुष परम भाव में ही स्थित हैं और अज्ञानी मिथ्यादृष्टि अपरमभाव में स्थित हैं।

(2) शुभोपयोग और शुद्धोपयोग की अपेक्षा– अनुभव के काल में शुद्धोपयोग की अपेक्षा चौथे, पाँचवें और सातवें गुणस्थानवर्ती परमभाव में स्थित हैं तथा शुभोपयोग के काल में चौथे, पाँचवें और छठवें गुणस्थानवर्ती अपरमभाव में स्थित हैं।

(3) वीतरागी सर्वज्ञ और छद्मस्थ की अपेक्षा – तेरहवें गुणस्थान से लेकर आगे के सभी वीतरागी सर्वज्ञ परमभाव में स्थित हैं और बारहवें गुणस्थान तक के सभी ज्ञानी-अज्ञानी छद्मस्थ अपरमभाव में स्थित हैं।

प्रश्न 141 व्यवहार के बिना तीर्थ का और निश्चय के बिना तत्त्व का नाश किस प्रकार हो जायेगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – यहाँ तीर्थ का अर्थ उपदेश और तत्त्व का अर्थ शुद्धात्मा का अनुभव है। उपदेश की प्रक्रिया प्रतिपादन द्वारा संपन्न होती है तथा प्रतिपादन करना व्यवहार का काम है, अत: व्यवहार को सर्वथा असत्यार्थ मानने से तीर्थ का लोप हो जायेगा।

शुद्धात्मा का अनुभव निश्चय नय के विषयभूत अर्थ में एकाग्र होने पर होता है, अत: निश्चय नय को छोड़ने पर तत्त्व की प्राप्ति नहीं होगी।

प्रश्न 142 'जिनवचनों में रमण करते हैं' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – आत्मकल्याण की भावना से जिनवाणी का अत्यंत रुचिपूर्वक स्वाध्याय करना, पढना, पढाना, लिखना, लिखाना, उसके अर्थ का विचार करना, मंथन करना, परस्पर चर्चा करना, प्रश्नोत्तर करना आदि व्यवहार से जिनवचनों में रमण करना है और जिनवाणी में प्रतिपादित शुद्धात्मवस्तु का अनुभव करना निश्चय से जिनवचनों में रमण करना है।

प्रश्न 143 व्यवहार जिनवचनों में रमण करना कौनसी लब्धि का प्रतीक है?

उत्तर – देशना लब्धि का प्रतीक है।

प्रश्न 144 निश्चय जिनवचनों में रमण करना कौनसी लब्धि का प्रतीक है?

उत्तर – करण लब्धि का प्रतीक है।

प्रश्न 145 सम्यग्दर्शन यत्नसाध्य है या सहजरूप है?

उत्तर – सम्यग्दर्शन यत्नसाध्य नहीं, सहजरूप है।

प्रश्न 146 क्या निश्चय और व्यवहार सम्यग्दर्शन अलग-अलग व्यक्ति को हो सकते हैं? जैसे- रमेश को निश्चय सम्यग्दर्शन हो और सुरेश को व्यवहार सम्यग्दर्शन।

उत्तर – नहीं, यह दोनों सम्यग्दर्शन एक ही व्यक्ति को एक ही समय में होते हैं। धर्मात्मा जीव के आत्मश्रद्धान को निश्चय सम्यग्दर्शन और नवतत्त्व के श्रद्धान को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहते हैं।

गाथा – 13

प्रश्न 147 समयसार की मूल विषय-वस्तु क्या है?

उत्तर – भूतार्थनय से नवतत्त्वों में प्रकाशमान आत्मज्योति को खोजना ही समयसार की मूल विषय-वस्तु है।

प्रश्न 148 भूतार्थनय का कार्य क्या है?

उत्तर – सर्वत्र आत्मज्योति को खोजना भूतार्थनय का कार्य है।

प्रश्न 149 इस गाथा में सम्यग्दर्शन किसे कहा है?

उत्तर – इस गाथा में भूतार्थनय से जाने गए नवतत्त्वों को सम्यग्दर्शन कहा है।

प्रश्न 150 आत्मख्याति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – आत्मख्याति अर्थात् आत्मा की प्रसिद्धि। अपना आत्मा स्वंय को ही जाने, अनुभव करे; अपने में ही अपनापन स्थापित करे, अपने में ही जम जाय, रम जाय, समा जाय – यही सच्ची आत्मख्याति है।

प्रश्न 151 नौ तत्त्वों के नाम बताइए।

उत्तर – जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष – ये नौ तत्त्व हैं।

प्रश्न 152 इस गाथा में नव तत्त्वों को कितने भागों में बाँटा गया है? नाम बताइए।

उत्तर – इस गाथा में नव तत्त्वों को दो भागों में बाँटा गया है- भाव और द्रव्य। भाव-पुण्य, भाव-पाप, भाव-आस्रव, भाव-संवर, भाव-निर्जरा, भाव-बंध और भाव-मोक्ष जीव हैं और जीव के ही विस्तार हैं। द्रव्य-पुण्य, द्रव्य-पाप, द्रव्य-आस्रव, द्रव्य-संवर, द्रव्य-निर्जरा, द्रव्य-बंध और द्रव्य-मोक्ष अजीव हैं, अजीव के ही विस्तार हैं।

प्रश्न 153 संकल्प किसे कहते हैं?

उत्तर – द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म आदि पुद्गलद्रव्यों में अपनत्व स्थापित करने को संकल्प कहते हैं।

प्रश्न 154 विकल्प किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञेयों के भेद से ज्ञान में भेदों के ज्ञात होने को विकल्प कहते हैं।

प्रश्न 155 सम्यग्दर्शन की प्राप्ति किसके आश्रय से होती है?

उत्तर – सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संकल्प-विकल्प रहित शुद्धनय के विषयभूत शुद्धात्मा के आश्रय से होती है।

गाथा–14

प्रश्न 155 आत्मा कितने प्रकार से अनेकरूप दिखाई देता है?

उत्तर – आत्मा पाँच प्रकार से अनेकरूप दिखाई देता है-

1. अनादिकाल से कर्मपुद्गल के संबंध से बंधा हुआ कर्मपुद्गल के स्पर्श वाला दिखाई देता है।
2. कर्म के निमित्त से होने वाली नर-नारकादि पर्यायों में भिन्न-भिन्न स्वरूप से दिखाई देता है।
3. कर्म के निमित्त से होने वाले मोह-राग-द्वेष आदि परिणामों से सहित वह सुख-दु:ख रूप दिखाई देता है।
4. वह दर्शन-ज्ञान आदि अनेक गुणों से विशेष रूप दिखाई देता है।
5. ज्ञानादिक पर्याय में हीनाधिकता होती है। पर्याय में हीनाधिकता होना- यह पर्याय स्वभाव है, इससे आत्मा नित्य, नियत, एकरूप दिखाई नहीं देता।

प्रश्न 156 इस गाथा में शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को कितने विशेषणों के माध्यम से समझाया गया है? नाम बताइए।

उत्तर – इस गाथा से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को पाँच विशेषणों से समझाया गया है– अबद्धस्पृष्ट, अविशेष, अनन्य, नियत और असंयुक्त।

प्रश्न 157 उक्त पाँच विशेषणों के माध्यम से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को किन-किन भावों से भिन्न बताया गया है? संक्षेप में बताइए।

उत्तर – इस गाथा में अबद्धस्पृष्ट विशेषण के माध्यम से पर और द्रव्यकर्म से भिन्न बताया है। अविशेष विशेषण से गुणभेद से भिन्न बताया है। अनन्य विशेषण से व्यंजन पर्याय से, देह से भिन्न बताया है। नियत विशेषण से अर्थपर्यायों से भिन्न बताया है। असंयुक्त विशेषण से भावकर्म रूप रागादि विकारी भावों से भिन्न बताया है।

संक्षेप में कहें तो इन पाँच विशेषणों के माध्यम से आत्मा को द्रव्यकर्म, भावकर्म और शरीर से भिन्न, पर्यायों से पार, सर्वपर्यायों में एकाकार और गुणभेद से भिन्न, प्रदेशभेद से भिन्न, असंख्यात प्रदेशी, एक बताया गया है।

प्रश्न 158 शुद्धनय से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, नियत, अविशेष और असंयुक्त आत्मा की अनुभूति शुद्धनय है।

प्रश्न 159 क्या शुद्धनय और आत्मा की अनुभूति पर्यायवाची है।

उत्तर – हाँ, दोनों पर्यायवाची ही हैं।

प्रश्न 160 इस गाथा में इन पाँच विशेषणों के माध्यम से क्या समझाया जा रहा है?

उत्तर – इन पाँच विशेषणों के माध्यम से आत्मा का शुद्ध स्वरूप समझाया जा रहा है।

प्रश्न 161 'अबद्धस्पृष्ट' विशेषण के माध्यम से क्या समझाया जा रहा है? विस्तार से बताइए।

उत्तर – 'अबद्धस्पृष्ट' विशेषण आत्मा की पर से भिन्नता को बतलाता है।

जब आत्मा का पर के साथ कोई संबंध ही नहीं है तो कर्मों से बंधने की बात ही कहाँ रहती है? इसीप्रकार जब आत्मा में स्पर्श नामक गुण ही नहीं है तो उसे कोई छू भी कैसे सकता है?

जिसप्रकार कमलिनी का पत्ता पानी में डूबा हुआ होने पर भी अपने रूखे स्वभाव के कारण रंचमात्र भी गीला नहीं होता; उसीप्रकार आत्मा कर्मों के मध्य स्थित होने पर अपने अबद्ध-अस्पर्शी स्वभाव के कारण कर्मों से अबद्ध ही है, अस्पर्शी ही है, पर से भिन्न ही है।

प्रश्न 162 अनन्य विशेषण के माध्यम से क्या बताया गया है? विस्तार से उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर – अनन्य विशेषण द्वारा शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को असमान जातीय द्रव्य पर्यायों से, नर-नारकादि पर्यायों से पार बताया गया है।

जिसप्रकार मिट्टी से बने हुए बर्तनों में घड़ा और तवा अन्य-अन्य है, जुदे-जुदे हैं, घड़ा तवा नहीं है और तवा घड़ा नहीं है; उसीप्रकार मनुष्य और नारकी अन्य-अन्य, जुदे-जुदे ही हैं; मनुष्य नारकी नहीं है, नारकी मनुष्य नहीं है; किन्तु जब हम घड़ा और तवा को दृष्टि में न लेकर जिस मिट्टी से वे बने हैं, उस मिट्टी के रूप में ही देखें तो घड़ा भी मिट्टी ही है और तवा भी मिट्टी ही है; अत: वे दोनों अन्य-अन्य नहीं; अनन्य (एक) ही हैं।

इसीप्रकार जब हम मनुष्य और नारकी पर्यायों को दृष्टि में न लेकर, जिस आत्मा की वे पर्यायें हैं, उन सभी पर्यायों में व्याप्त एकाकार उस आत्मा को देखें तो मनुष्य भी आत्मा ही है और नारकी भी आत्मा ही है; अत: नारकी और मनुष्य दोनों अन्य-अन्य नहीं, अनन्य (एक) ही हैं।

प्रश्न 163 नियत विशेषण के माध्यम से क्या बताया गया है? विस्तार से समझाइए।

उत्तर – नियत विशेषण के माध्यम से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा में षट्गुणीहानि-वृद्धिरूप पर्यायों और औपशमिकभाव, क्षायोप-शमिकभाव व क्षायिकभाव रूप पर्यायों का भी निषेध किया गया है।

जिसप्रकार समुद्र में आने वाले ज्वार-भाटे की ओर से समुद्र को देखें तो वह घटता भी है और बढ़ता भी है, अत: समुद्र अनियत ही है; तथापि यदि समुद्र को उसके नियत स्वभाव की ओर से देखें तो वह न कभी घटता है और न कभी बढ़ता ही है, सदा अपनी मर्यादा में रहता है, अत: वह नियत ही है।

उसीप्रकार द्रव्य होने से आत्मा में षट्गुणीहानि-वृद्धिरूप पर्यायें भी हैं और औपशमिकभाव, क्षायोपशमिकभाव और क्षायिकभाव रूप पर्यायें भी हैं। इन पर्यायों की ओर से देखने पर आत्मा भी घटता-बढ़ता है, अत: अनियत है; पर नित्य स्थिर, नियतस्वभाव की ओर से देखने पर आत्मा अनियत नहीं, नियत ही है।

प्रश्न 164 षट्गुणीहानि-वृद्धि पर्यायों से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - अगुरुलघुगुण का परिणमन स्वाभाविक अर्थपर्यायें हैं। पर्यायें बारह प्रकार की हैं- छह वृद्धिरूप और छह हानिरूप।

अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि - यह छह वृद्धिरूप पर्यायें हैं।

अनन्तभागहानि, असंख्यातभाग हानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अनन्तगुणहानि - ये छह हानिरूप पर्यायें हैं।

प्रश्न 165 'अविशेष' विशेषण के माध्यम से क्या बताया गया है?

उत्तर - अविशेष विशेषण से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को गुणभेद से भिन्न बताया गया है।

जिसप्रकार सोने को सोने में विद्यमान गुणों की ओर से देखें तो सोना पीला है, चिकना है, भारी है - यह बात सत्य ही है; तथापि जिसमें सर्व विशेष विलय को प्राप्त हो गए हैं; ऐसे सोने के शुद्ध स्वभाव की ओर से देखें तो सोना तो सोना ही है, पीला, चिकना आदि कुछ भी नहीं।

उसीप्रकार ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि गुणों की ओर से देखने पर

आत्मा ज्ञान है, चारित्र है; पर जिसमें सर्व विशेष विलय को प्राप्त हो गए हैं, ऐसे आत्मस्वभाव के समीप जाकर देखें तो आत्मा तो आत्मा ही है, न ज्ञान है, न दर्शन है, न चारित्र है।

प्रश्न 166 'असंयुक्त' विशेषण के माध्यम से क्या समझाया गया है? विस्तार से बताइए।

उत्तर - असंयुक्त विशेषण के माध्यम से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को रागादि विकारी पर्यायों से भिन्न बताया गया है।

जिसप्रकार शीतलता जल का स्वभाव है और गर्म होना संयोगीभाव है, विभावभाव है; उसीप्रकार रागादि से असंयुक्त रहना आत्मा का स्वभाव है और रागादि से संयुक्त होना आत्मा का विभावभाव है। शुद्धनय का विषयभूत आत्मा रागादि से असंयुक्त ही है।

प्रश्न 167 कार्य परमात्मा और कारण परमात्मा में क्या अंतर है?

उत्तर - अरहंत-सिद्ध कार्य परमात्मा कहलाते हैं। इनकी ही मूर्तियाँ मंदिर में विराजमान होती हैं। इन मूर्तियों के माध्यम से हम मूर्तिमान अरहंत, सिद्ध परमात्मा की उपासना, भक्ति, पूजन करते हैं।

देहदेवल (देहरूपी मंदिर) में विराजमान शुद्धनय का विषयभूत निज आत्मा भी परमात्मा है, यही निजात्मा कारण परमात्मा कहलाता है। निज आत्मा में दर्शन को ही सम्यग्दर्शन कहते हैं और इससे किसी कर्म का बंध नहीं होता, अपितु कर्मबंधन कटते हैं, बंध का अभाव होता है। जबकि मंदिर में विराजमान परमात्माओं के दर्शन से, देवदर्शन से सातिशय पुण्य का बंध होता है।

प्रश्न 168 किसकी आराधना परमधर्म है?

उत्तर - अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, नियत, अविशेष, असंयुक्त, अनुभवगम्य निजात्मा ही एकमात्र आराध्य है और उसकी आराधना ही परमधर्म है।

प्रश्न 169 आत्मानुभूति किसे कहते हैं?

उत्तर - शुद्धनय के विषयभूत आत्मा की अनुभूति को ही आत्मानुभूति कहते हैं।

प्रश्न 170 क्या आत्मानुभूति और ज्ञानाभूति में अंतर है? कारण सहित बताइए।

उत्तर - नहीं, आत्मानुभूति और ज्ञानानुभूति दोनों एक ही हैं; इनमें भेद तो मात्र नाम का ही है। जब ज्ञान और आत्मा को एक मानकर बात की जाती है, तब आत्मा की अनुभूति को ही ज्ञान की अनुभूति कहा जाता है। आत्मा गुणी है और ज्ञान आत्मा का गुण। गुण-गुणी को अभेद मानकर आत्मानुभूति को ज्ञानानुभूति कहा जाता है।

गाथा-15

प्रश्न 171 इस गाथा में संपूर्ण जिनशासन का जानने वाला किसे कहा है?

उत्तर - जो अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, नियत, अविशेष और असंयुक्त आत्मा को जानता है; वह सम्पूर्ण जिनशासन को जानता है अर्थात् आत्मानुभवी को ही सम्पूर्ण जिनशासन का मर्मज्ञ कहा है।

प्रश्न 172 जिनशासन को हम कितने रूपों में देखते हैं?

उत्तर - जिनशासन को हम दो रूपों में देखते हैं-
द्रव्यश्रुत और भावश्रुत।

प्रश्न 173 द्रव्यश्रुत किसे कहते हैं?

उत्तर - द्वादशांग जिनवाणी को द्रव्यश्रुत कहते हैं।

प्रश्न 174 भावश्रुत किसे कहते हैं?

उत्तर - जिनवाणी के प्रतिपाद्य को जानने वाली श्रुतज्ञान पर्याय को भावश्रुत कहते हैं।

प्रश्न 175 द्रव्यश्रुत और भावश्रुत में क्या अंतर है?

उत्तर - द्रव्यश्रुत अबद्धस्पृष्ट आत्मा के स्वरूप का निरूपण करता है और भावश्रुत अबद्धस्पृष्ट आत्मा का अनुभव करता है।

प्रश्न 176 शास्त्रों के स्वाध्याय का मूल प्रयोजन क्या है? और क्यों?

उत्तर - शास्त्रों के स्वाध्याय का मूल प्रयोजन तो एकमात्र दृष्टि के विषयभूत निज आत्मा को जानना है; क्योंकि उसके आश्रय से ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप मोक्षमार्ग की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न 177 शास्त्र स्वाध्याय की अनिवार्यता किसे है और किसे नहीं?

उत्तर - जब तक आत्मानुभूति नहीं हो जाती, तब तक सभी को शास्त्र

स्वाध्याय करना ही चाहिए। जिन्हें आत्मानुभूति हो जाती है, उन्हें यद्यपि शास्त्र स्वाध्याय की अनिवार्यता नहीं है; तथापि उपयोग को अन्यत्र भटकने से बचाने के लिए और उपयोग की विशुद्धि के लिए ज्ञानी भी स्वाध्याय करते हैं।

प्रश्न 178 सामान्यज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर - शुद्ध ज्ञान को सामान्यज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 179 विशेषज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर - ज्ञेयाकार ज्ञान को विशेषज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 180 ज्ञेयाकार किसे कहते हैं, और क्यों?

उत्तर - ज्ञेयों को जानने वाले ज्ञान को ज्ञेयाकार ज्ञान कहते हैं; क्योंकि ज्ञानपर्याय में उन ज्ञेयों के आकार प्रतिबिम्बित होते हैं।

प्रश्न 181 सामान्यज्ञान का आविर्भाव कब होता है?

उत्तर - जब कोई ज्ञानी अन्य ज्ञेयाकारों के संयोग की रहितता से केवल (Only) ज्ञान का अनुभव करता है तो विशेषज्ञान का तिरोभाव और सामान्यज्ञान का आर्विभाव हो जाता है। सामान्यज्ञान के आर्विभाव और विशेषज्ञान के तिरोभाव से ज्ञानमात्र का अनुभव करते हुए ज्ञान आनन्दसहित पर्याय में अनुभव में आता है। यही आत्मानुभूति है। संक्षेप में कहें तो आत्मानुभूति के काल में सामान्यज्ञान, अकेला ज्ञान ज्ञान-ज्ञान का आविर्भाव होता है।

प्रश्न 182 क्या सामान्यज्ञान का आविर्भाव होना, शुद्धनय का उदय होना, ज्ञानानुभूति और आत्मानुभूति पर्यायवाची हैं?

उत्तर - हाँ है, सामान्यज्ञान का आविर्भाव होना ही शुद्धनय का उदय होना है, ज्ञानानुभूति है, आत्मानुभूति है।

प्रश्न 183 क्या अनुभव के काल से भिन्न समय में भी सामान्यज्ञान का आविर्भाव हो सकता है?

उत्तर - हाँ, अनुभव के काल से भिन्न समय में सामान्यज्ञान का आविर्भाव हो सकता है। वह धारणा ज्ञान के रूप में तो सदा ही रहता है और स्मृति, प्रत्यभिज्ञान के रूप में कभी रहता है, कभी नहीं रहता है।

प्रश्न 184 साध्यभाव और साधकभाव में क्या अन्तर है?

उत्तर – अरहंत व सिद्धदशा साध्यभाव है और उसके पूर्व की शुद्धोपयोग दशा साधकभाव है।

चौथे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक साधकदशा है तथा अरहंत और सिद्ध साधकदशा है।

पर्याय में पूर्णता की प्राप्ति हो जाना साध्यदशा है और आत्मोपलब्धि होना, पूर्णता की ओर अग्रसर होना साधकदशा है।

आत्मा में उपयोग का केन्द्रित होना और फिर बाहर आ जाना, फिर अन्दर जाना और फिर बाहर आ जाना – इसप्रकार बार-बार अन्दर आना और बाहर जाना साधकदशा है तथा शुद्धोपयोग में अनन्तकाल तक के लिए समा जाना साध्यदशा है।

दूसरी अपेक्षा से चौथे गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक साधकदशा है और सिद्ध अवस्था साध्यदशा है।

प्रश्न 185 आत्मा की सच्ची उपासना क्या है?

उत्तर – उपयोग का आत्मसम्मुख होना ही आत्मा की सच्ची उपासना है।

गाथा–16

प्रश्न 186 इस गाथा में दर्शन-ज्ञान-चारित्र के सेवन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्रकटता ही दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सेवन कहा जाता है, यही आत्मा की उपासना है।

प्रश्न 187 दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उपासना को कौन-सी उपासना कहा जाता है? और क्यों?

उत्तर – दर्शन-ज्ञान-चारित्र – ये तीन हैं; अनेक हैं, भेद हैं; अत: इनकी उपासना को व्यवहार उपासना कहा जाता है।

प्रश्न 188 निश्चय उपासना किसे कहा जाता है?

उत्तर – शुद्धनय के विषयभूत आत्मा की उपासना को निश्चय उपासना कहा जाता है।

प्रश्न 189 शुद्धनय के विषय में किसके भेद को मलिनता कहा जाता है?

उत्तर – शुद्धनय के विषय में दर्शन-ज्ञान-चारित्र के भेद को भी मलिनता कहा जाता है।

गाथा–17–18

प्रश्न 190 मोक्ष के इच्छुक पुरुषों को क्या करना चाहिए?

उत्तर – मोक्ष के इच्छुक पुरुषों को जीव को जानकर, श्रद्धानकर, अनुभव के द्वारा उसमें तन्मय हो जाना चाहिए।

प्रश्न 191 निसर्गज सम्यग्दर्शन और अधिगमज सम्यग्दर्शन में क्या अंतर है?

उत्तर – किसी जीव को देशनालब्धि पूर्वभव में या बहुत पहले प्राप्त हुई हो और उस समय उसने पुरुषार्थ न कर पाया हो; इसकारण सम्यग्दर्शन की प्राप्ति भी उसे न हो पाई हो; बाद में बहुत काल बाद यह अगले भव में वह पुरुषार्थ करे और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कर ले तो उसे निसर्गज सम्यग्दर्शन कहेंगे। तत्काल देशना का अभाव होने से उसे निसर्गज कहते हैं।

देशना मिले और अल्पसमय में ही, उसी भव में ही पुरुषार्थ करके सम्यग्दर्शन प्राप्त कर ले तो उसे अधिगमज सम्यग्दर्शन कहते हैं।

''इसप्रकार इस जानने के अर्थ कभी स्वयं ही विचार करता है, कभी शास्त्र पढ़ता है, कभी सुनता है, कभी अभ्यास करता है, कभी प्रश्नोत्तर करता है, – इत्यादि रूप प्रवर्तता है। अपना कार्य करने का इसको हर्ष बहुत है, इसलिये अन्तरंग प्रीति से उसका साधन करता है। इसप्रकार साधन करते हुए जब तक (1) सच्चा तत्त्वश्रद्धान न हो, (2) 'यह इसीप्रकार है' – ऐसी प्रतीति सहित जीवादि तत्त्वों का स्वरूप आपको भासित न हो, (3) जैसे पर्याय में अहंबुद्धि है वैसे केवल आत्मा में अहंबुद्धि न आये, (4) हित-अहितरूप अपने भावों को न पहिचाने – तबतक सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि है। यह जीव थोड़े ही कालमें सम्यक्त्व को प्राप्त होगा; इसी भव में या अन्य पर्याय में सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा।''

–मोक्षमार्ग प्रकाशक

(पृष्ठ 260)

लेखिका की अन्य कृतियाँ

01. जैन नर्सरी (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
02. जैन के.जी. भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
03. जैन के.जी. भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
04. जैन के.जी. भाग-3 (हिन्दी, अंग्रेजी, गुज. मराठी, तमिल)
50-06. जैन कलर बुक भाग 1-2 (ड्राइंग बुक)
07-10. जैन जी.के. भाग-1 से 4 तक (हिन्दी, अंग्रेजी)
11-16. जैन जी.के. भाग-5 से 10 तक (हिन्दी)
17-18. चलो पाठशाला, चलो सिनेमा भाग 1-2
19. सीखें हम गाते-गाते
20. शब्दों की रेल
21-23. आगम प्रवेश भाग-1,2,3
24. मुझमें भी एक दशानन रहता है
25. संस्कार का चमत्कार (दादी की कहानी)
26. बढ़ते कदम
17. राम कहानी
28. विचार के पत्र : विकार के नाम
29. तलाश : सुख की
30. मुक्ति की युक्ति
31. एक संभावना यह भी
32. सत्ता का सुख
33. बालबोध प्रशिक्षण गाईड
34. प्रवेशिका प्रशिक्षण गाईड
35. अर्चना गाईड
36. नयचक्र गाईड (अध्यात्म के नय)
37. आगम के नय
38. अनुपम खोज (सप्तभंगी टीका)
39. परीक्षामुख प्रवेशिका (टीका)
40. उपादान निमित्त दोहा (टीका)
41. प्रमाणज्ञान
42. आत्मानुभूति कैसे?
43. जैनदर्शनसार
44. आचार्य अमृतचन्द्र और उनका पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (लघु शोध)
45. आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार : एक समालोचनात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध)
46. मिनी समयसार
47. समयसार प्रश्नोत्तरमाला भाग-1
48-50. परमागम प्रवेशिका भाग-1, 2, 3/4
51. प्रमाणज्ञान : सम्यग्ज्ञान

जैन गेम्स

1. नो टाइम पास
2. हमारी लाईफ
3. लगे रहो जीवराज
4. चौबीसी (Poster)
5. Maze to Moksh

E-books

01. मिनी समयसार भाग -1
02. मिनी समयसार भाग -2
03. परमागम प्रवेशिका भाग - 1
04. परमागम प्रवेशिका भाग - 2
05. परमागम प्रवेशिका भाग - 3
06. परमागम प्रवेशिका भाग - 4
07. मीडियम समयसार भाग - 1
08. प्रमाणज्ञान : सम्यग्ज्ञान
09. समयसार प्रश्नोत्तरमाला : भाग-1